R.N.I.- UP-
HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

सुमन दुग्गल पर विशेषांक

वर्ष 24 अंक 10 रविवार, इलाहाबाद, 21 जुलाई 2024 पृष्ठ 8 विशेषांक मूल्यः 5 रू0

संपादकीय

इस बार सुमन दुग्गल

खिला सुमन को देख, प्रफुल्लित मन होता ।
तन-मन में तब काव्य रस का श्रोता बहता ।
लिखा बहुत कुछ जाता है, उस क्षण भर में ।
क्या-क्या बात बताऊं उस बिरले रण में ।

तो बात हो रही है सुमन ढींगरा दुग्गल की । पंजाब के सुल तानपुर लोधी में जन्मी, गोरखपुर में पली-बढ़ी और इलाहाबाद शहर में अब बसेरा है । जीवन के तमाम पलों को बड़ी बारीकी से महसूस कर, उसे कविता, गीत, गजल में व्यक्त करने वाली बेहतरीन शायरा वरिष्ठ कवयित्री सुमन ढींगरा दुग्गल का कोई जवाब ही नहीं है । कुशल गृहणी और ममत्व से परिपूर्ण सुमन ढींगरा दुग्गल के आंचल में बस आपको प्रेम-प्रेम और प्रेम ही

दिखाई पड़ेगा । जीवन के तमाम झंझावातों को झेलती हुई सुमन ढींगरा दुग्गल ने कविता, गीत, गजल, लघुकथा तथा कहानी साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर कलम चलाई है , लेकिन उनकी पहचान बनी एक कुशल गजलकारा के रूप मे ।
बानगी देखिये -

हे ईश्वर विनती करूँ, लिये प्रकंपित गात ।
करुणा दृष्टि बनी रहे , मांगू वर ये तात।।
जगमग ऊषा सुन्दरी,चली धरा की ओर।
छलका कलश अबीर का, उतरी हँसती भोर।।

दूसरी बानगी

चली आई धरा पर फूलों का उबटन लगाती धूप
नवोढा सी मेरे आँगन भी उतरी है लजाती धूप
बचा कर आँख सूरज से वो आई धरती से मिलने
लजीली कलियों को धीरे से कुछ कह कर हँसाती धूप

तीसरी बानगी

मेरे हँसते ही इन आँखों को पानी कौन देता है
खुशी के साथ ये ग़म की कहानी कौन देता है
किसी को चीज़ कोई बे-मआनी कौन देता है
भरी बरसात में पौदों को पानी कौन देता है

वरिष्ठ रचनाकार सुमन ढींगरा दुग्गल की रचनाओं में उनका ही निराला अंदाज दिखता है । इस वर्ष 2024 का **महिला श्री साहित्य साधना सम्मान** देते हुए संस्था प्रफुल्लित है । संस्था आपके सुंदर जीवन की कामना करता है । अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरूर दें ।
अंत में -

पोथी लिख-लिख कर गए ,
बड़े-बड़े महान ।
उनकी लेखनी गा रहे ,
हम सब नर सुजान ।

- उमेश श्रीवास्तव

मेरा नाम सुमन दुग्गल है

मेरा नाम सुमन दुग्गल है। साहित्य की दुनिया में मुझे सुमन ढींगरा दुग्गल के नाम से जाना जाता है। मैं इलाहाबाद में रहती हूँ। मेरा परिचय साधारण सा है। एक गृहणी हूँ। पूरी तरह से परिवार को समर्पित। जैसा कि आम भारतीय गृहणियां होती हैं। जिनका वक्त़ पति और बच्चों के बीच धुरी बदल-बदल कर कटता है।
मेरा जन्म पंजाब के 'सुल्तानपुर लोदी' में हुआ जो मेरा ननिहाल है। पालन पोषण गोरखपुर में हुआ। गोरखपुर में मेरे पिता स्वर्गीय श्री शांति स्वरूप ढींगरा प्रसिद्ध व्यवसायी थे। गोरखपुर के 'कार्मल इंटर कॉलेज' से मैंने शिक्षा प्राप्त की इस के पश्चात 'गोरखपुर विश्वविद्यालय' में भी अध्ययन किया। मेरी माँ स्वर्गीय श्रीमती तृप्ता ढींगरा साहित्य प्रेमी थी। उन्होंने बचपन से ही मुझे और भाई बहनों को बाल पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार मेरे अंदर पुस्तकें पढ़ने की लल क जाग गई। मैं ने कहानियाँ, कविता, उपन्यास आदि पढ़ना शुरू किया। धीरे-धीरे यह मेरा शौक़ बन गया जो आज भी कायम है।

10-11 वर्ष की अवस्था में पहली कविता लिखी थी। मेरी हिन्दी की अध्यापिका ने मुझे और लि खने के लिए प्रेरित किया। फिर स्कूल के विभिन्न कार्यक्रमों के लिए निबंध, कविता, लेख आदि लि खती रही। हिंदी में छायावादी युग की रचनाएँ विशेष रूप से मुझे आकर्षित करती थीं। साहित्य से प्रेम के कारण मैंने हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य और संस्कृत को अपना विषय बनाया था। अंग्रेजी साहित्य में कीटस शैली, बायरन, ने मुझे बहुत प्रभावित किया था। मैंने अंग्रेजी भाषा में भी विवाह से पूर्व कविताएँ लिखीं। पंजाबी भाषा में में भी कुछ भजन और ग़ज़ल अनुवाद किया है। विवाह से पूर्व तक मैं स्वान्तःसुखाय के लिए कविताएँ लि खती रही। तत्कालीन कुछ पत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई थीं।

मेरा विवाह 20 वर्ष की आयु में हुआ था। उस समय मैं बी. ए फाईनल में थी। विवाह के कारण परीक्षा नहीं दे पाई। विवाह के बाद लंबे अंतराल के लिए लिखना छूट गया। समय के साथ मेरी बेटी और बेटा बड़े हो गए और 12 वीं की पढ़ाई के बाद उच्च शिक्षा के लिए दूसरे शहरों में चले गए। उनके जाने के बाद एक खालीपन ने मुझे घेर लिया। मेरी स्थिति देखते हुए मेरे पति डॉ एस.के दुग्गल ने 2001 में मुझे अधूरी शिक्षा पूरी करने के लिए प्रेरित किया। मैंने बी. ए व एम. ए की शिक्षा पूर्ण की। इस क्रम में मैं पुनः साहित्य से जुड़ गयी। लेखन का भूला बिसरा शौक़ फिर जागृत हो गया।
वो सुमन जो वक्त़ के साथ कहीं खो गई थी वापस आ गयी। साहित्य से संपर्क में आने पर दुबारा कविताएँ लिखने लगी।
एम. ए की डिग्री के बाद मैं नेअपने कविता लिखने के विस्मृत शौक़ को पूरा समय दिया।

2014 में इंटरनेट की दुनिया से मेरा परिचय हुआ। दूसरों को पढ़ने और कुछ नया सीखने की इच्छा से मैं कुछ मंचों से जुड़ गयी। इन में से एक डॉ असद निजामी जी का 'प्रतिभा मंच ' था। यहाँ ग़ज़ल विधा से मेरा परिचय हुआ। प्रतिभा मंच पर प्रतिदिन आनलाईन तरही मुशायरे का आयोजन होता था। मैं इस में उत्साह से भाग लेती थी। बह और अरूज़ की जानकारी न होने कारण रदीफ़

शेष पृष्ठ 2 पर...

पृष्ठ 1 का शेष...

मेरा नाम सुमन ढींगरा...

काफ़िया मिला कर कविता की तरह लिख देती थी। प्रतिभा मंच पर जनाब हरीश राही भी थे जो बह्र के अच्छे जानकार थे और नवोदित कहने वालों की मदद करते थे। मैं ने ये विधा सीखने की ठान ली।हरीश जी ने मुझे ग़ज़ल की आरंभिक जानकारी दी। धीरे-धीरे स्वयं सीखने लगी और ग़ज़ल कहने लगी। मगर ग़ज़लों में परिपक्वता नहीं थी सूक्ष्म जानकारी का अभाव था।

2017 में मेरी खुशकिस्मती से आनलाईन ही मेरी मुल ाक़ात अपने उस्ताद मोहतरम खा़लिद बाराबंकवी साहब से जो कि मेरे फेसबुक मित्र भी थे। उन्होंने मेरी पोस्ट की हुई ग़ज़लों में मुझे कमियाँ बताईं। मेरे बहुत आग्रह करने पर वह मेरा मार्ग दर्शन करने लगे।

अक्सर लोग मेरे उर्दू शब्दों की जानकारी के बारे सवाल करते हैं। उर्दू मुझे लिखनी-पढनी नहीं आती है। परंतु उस के सामान्य शब्दों का प्रयाप्त ज्ञान था। घर मे साधारण बोलचाल की भाषा में उर्दू शब्दों का काफी प्रयोग होता था। पंजाबी भाषा में भी उर्दू के शब्द रचे-बसे हैं। मेरी सखी मुस्लिम थी। हम ने 15-16 वर्षों के सान्निध्य में एक दूसरे के धर्मों और भाषाओं के विषय में बहुत कुछ सीखा। जो आगे जा कर ग़ज़ल लेखन में मेरा सहायक बना। काफ़िया व अन्य नये शब्दों का मुझे सही ज्ञान नहीं था इसलि ए सही प्रयोग में मुझे दिक्कत आती थी। अपनी इस कमी को दूर करने के लिए मै ने उर्दू हिन्दी शब्दकोष लिया। पर वह खा़स सहायक न हुआ। मैं ग़ज़लों की बारीकियों को समझने के लिए आनलाईन रेख़्ता पर जा कर प्रसिद्ध शायरों को पढ़ती थी। आप वहाँ उर्दू के मुश्किल शब्दों को क्लिक कर के उस का अर्थ देख सकते हैं। मेरे लिए यह वरदान था। मैंने पसंदीदा लफ़्ज़ों को कॉपी में अर्थ के साथ लिखना शुरू किया।मेरी उर्दू की शब्द मंजूषा पहल ` से ज़्यादा संपन्न हो गई थी। मैं अब भी ऐसा करती हूँ। फिर भी प्रयोग में कुछेक बार जानकारी के अभाव में वचन और लिंग की गलती कर दी जिस के बारे उस्ताद मोहतरम खा़लिद बाराबंकवी ने ज्ञान दिया।

उन्हीं दिनों मुझे एक सर्जरी से गुजरना पड़ा। जिस में डाक्टरों की हुई चूक की वजह से मैं 11 महीने बिस्तर पर रही।हालत काफ़ी गंभीर थी। लगता था कभी चल नहीं पाऊंगी। पीड़ा और डिप्रेशन से ध्यान हटाने के लि ए और कुछ सार्थक करने के लिए मै ने खुद को ग़ज़ल की बारीकियाँ सीखने मे लगा दिया। उस्ताद मोहतरम खा़लिद बाराबंकवी साहब की मैं अत्यंत आभारी हूँ कि एक नौसिखिया शायरा को शागिर्दा की जगह दी और अपना अमूल्य समय दिया। ग़ज़ल की बारीकियाँ, लफ़्ज़ों को कैसे खूब़सूरती से ढाला जा सकता है मैंने इन से ही सीखा। मोहतरम खा़लिद बाराबंकवी साहब ने मुझे तसव्वुर को परवाज़ देने की प्ररेणा दी।

कुछ वर्षों की अथक और अनवरत मेहनत के बाद मेरी ग़ज़लों को भी लोगों द्वारा पसंद किया जाने लगा। 2001 में मेरा ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुआ पर कोरोना काल के कारण विमोचन आनलाइन किया गया ।मैं आप सभी को जो आयु को किसी काम में बाधक मानते हैं उनसे कहना चाहूंगी कि चाहे शिक्षा हो या शौक़ अगर आप में उसे करने की लगन और जुनून है तो उम्र बाधक नहीं बन सकती।

साहित्यिक गतिविधियाँ-----

मैं विभिन्न मंचों से जुड़ी हूँ।पहले प्रतिभा मंच से मैं वर्षों जुड़ी रही। इस मंच का पूरा कार्यभार संभाला। प्रतिदिन ग़ज़ल सिखाने के लिए फिलबदीह, शब्दों पर शेर , कविता, काव्य पाठ, चित्र पर लेखन आदि कई कार्यक्रम आयोजित करती थी। नये ग़ज़लकारों को ग़ज़ल की बह्र और ग़ज़ल कहना सिखाती थी मगर बाद में मंच के संस्थापक से वैचारिक मतभेद के कारण मंच छोड़ दिया। आज कल इलाहाबाद के एक पत्र 'शहर समता' से जुड़ी हुई हूँ।उस के संस्थापक श्री उमेश श्रीवास्तव जी हैं ।उन्होंने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार हेतु उन महिलाओं के लिए जो साहित्य में रुचि रखती हैं 'शहर समता विचार मंच' नाम से वाट्सऐप मंच बनाया है। यहाँ देश के विभिन्न प्रांतों के विभिन्न नगरों की अलग अलग इकाइयां गठित की गयी है। महिला रचनाकार मासिक गोष्ठी के द्वारा अपनी रचनाओं का आदान प्रदान करती हैं। शहर समता फेसबुक के अनेक कार्यक्रम भी महिलाओं की प्रतिभा को उभारने के लिए उन की रचनाओं को उपयुक्त मंच देते हैं। 'शहर समता ' पत्र में उन की रचनाएं भी प्रकाशित होती हैं। मैं इस मंच की राष्ट्रीय महासचिव हूँ सप्ताह में एक दिन ल ाईव कार्यक्रम भी आयोजन होता है। ' शहर समता' हिंदी साहित्य की हर विधा को बढ़ावा देता है। मैं इस संस्था से जुड़ कर बहुत प्रसन्न हूँ।

जीवन वृत्त

नाम--सुमन ढींगरा दुग्गल
जन्मस्थान - पंजाब, सुल्तानपुर लोदी कपूरथला
शिक्षा- गोरखपुर व प्रयागराज
निवास स्थान - इलाहाबाद
शिक्षा - M. A. (हिन्दी)

मनपसंद विधा
ग़ज़ल, शेर, कता नज़्म, मुक्त छंद, दोहे कविताएँ व गीत, भजन, कहानियाँ ,लेख
भाषा -हिंदी में सृजन ।
'गुंचे' नामक एकल ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित है कविताओं का संग्रह प्रकाशाधीन है।
शौक़-- किताबें पढना, तरह तरह के व्यंजन बनाना, निर्धन बच्चों को पढाना व ग़ज़लें लिखना।

साझा सँकलन
101महिला ग़ज़लकार - - के. पी अनमोल
खुशबू ए ग़ज़ल - - डॉ असद निज़ामी
काव्य -कलश-1अंतर्राष्ट्रीय साँझा संकलन - मनमोहन शर्मा शरण
हम परिंदों से प्यार करते हैं - सूफी ग़ज़ल संग्रह - मनमोहन सिंह दर्द लखनवी
साहित्य -कलश(पंजाब) सोनू सागर सूद
एहसास - ए - ग़ज़ल - इम्तियाज गाज़ी (गुफ़्तगू)
कारवान - ए-ग़ज़ल - डॉ असद निज़ामी
काव्य - अमृत - - अनुराधा प्रकाशन
तारे जमीन पर - - गौरव पोरवाल
महिला ग़ज़ल विशेषांक गुफ़्तगू -
इम्तियाज़ गाज़ी
काव्य कलश 2--अंतर्राष्ट्रीय साँझा संकलन- अनुराधा प्रकाशन
लॉकडाउन के 55 दिन - इम्तियाज़ गाज़ी- ग़ज़लों पर समीक्षा
ग़ज़ल कुंभ - (सम्मिलित रचनाएँ) दीक्षित दनकौरी
सृजन -सागर - मनमोहन शर्मा शरण
गुफ़्तगू विशेष परिशिष्ट - 50 ग़ज़लें (सुमन ढींगरा दुग्गल)

सम्मान
'अनुराधा प्रकाशन द्वारा 'साहित्य कलश' सम्मान

2016 में प्रतिभा मंच द्वारा 'प्रतिभा मंच गौरव' सम्मान।

2018 में चंदीगढ 'रीडर्स एन्ड राईटर्स संस्था द्वारा सम्मानित किया गया।

अनुराधा प्रकाशन द्वारा 'साहित्य श्री' तथा 'काव्य रत्न' सम्मान

2019 में गुफ़्तगू द्वारा सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान

प्रतिभा मंच द्वारा'' साहित्य गौरव''

सम्मान प्राप्त हुआ।

2019में 'गुफ़्तगू' द्वारा 'कैफ़ी आज़मी' सम्मान से सम्मानित

2020 मे' तारे ज़मीन पर' पत्रिका द्वारा सम्मानित

2023 में भव्य फाऊँडेशन द्वारा ग्लोबल एक्सेलेंसी एवार्ड

2023 में शहर समता द्वारा 'शैल तनया स्मृति सम्मान

विभिन्न प्रत्र पत्रिकाओं से सम्मान व प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुए हैं।

, कवि सम्मेलन, मुशायरा तथा लाइव काव्य पाठ करने पर अनेक मंचों ने सम्मानित किया है। टी. वी पर भी काव्य पाठ किया। यू ट्यूब पर पर कई साक्षात्कार भी दिये हैं। विदेशी मंच से भी लाईव साक्षात्कार और काव्य पाठ किया है।

'रेख़्ता' जैसे ख्यातिलब्ध अंतर्राष्ट्रीय पेज पर संसार के सुप्रसिद्ध शायरों की ग़ज़लों के साथ मेरी ग़ज़लों को भी स्थान दिया गया है।

' कविता कोश' जैसे प्रसिद्ध पेज पर संसार मेरी ग़ज़लें और कविताएं भी सम्मिलित की गयी हैं

सुमन ढींगरा दुग्गल...

मोहब्बत-ओ-इबादत की शायरा

डॉ तारिक़ क़मर

पुरुष प्रधान समाज यानी मर्दाना तसल्लुत वाले मुआशरे में जब दुनिया ए सुखन के हुक्मराँ ग़ज़ल को अपनी कनीज़ बनाकर हिकायत ए हुस्न ओ इश्क़ रक़म कर रहे थे तो गुजराँवाला के मज़ाफ़ात से एक आवाज़ उभरी थी ये आवाज़ 'पीरू प्रेमन ' की आवाज़ थी जिस ने ज़मान ओ मकाँ की हदों से बाहर निकल कर खा़ना ए इदराक पर दस्तक दी और ग़ज़ल के बड़े बड़े तरहदारों की दस्तारों के पेच खोल दिये...फिर रद्दे अमल ये हुआ कि झूठी आन बान की हिफ़ाज़त के लि ये ग़ज़ल के ज़मींदार इंतेक़ाम पर उतर आये और प्रेमन की आवाज़ शायरी के नक़्क़ार खा़ने में तूती की तरह दब कर रह गई.... ये अमल सदियों से जारी है लेकिन आवाज़ें क़त्ल कहाँ होती हैं खंज़रों की रसाई गल ो तक होती है लहजे और आवाज़ें खंज़रों की दस्तरस में नहीं...आवाज़ तो कभी मजबूर मोहब्बत के इज़हार के लिये आयशा अफ़ग़ानी के लहजे में ढल जाती है, कभी लैला खा़लि द का अज़्म बनकर उभरती है कभी रज़िया सुल्तान के घोड़ों की टापों से गूँजती है तो कभी साराशगुफ़्ता,अमृता प्रीतम और सुमन ढींगरा दुग्गल का रूप धार लेती है....

सुमन ढींगरा दुग्गल का कमाल ये है कि इनकी शायरी के दरिया में साराशगुफ़्ता और प्रेमन की तरह बग़ावत की वो लहरें नहीं जो अपने ही किनारों को काटती हैं बल्कि ऐसी मौजें रवाँ दवाँ हैं जो दरिया की रवानी का इशारा और एहतेजाज की लै का इस्तेआरा बन जाती हैं.. बहते दरिया की रवानी का गुमाँ होता है.... ऐसा लहजा है कि पानी का गुमाँ होता है...

सुमन ढींगरा दुग्गल की शायरी एक निहायत हस्सास, जज़्बाती, बेबाक और संस्कारों की ज़ंजीरों में जकड़ी हुई ग़ैरतमन्द औरत के एहसासात की अक्कास और तर्जुमान है, ये शायरी एक ऐसी औरत की कहानी है जो अपने चारों तरफ़ के माहौल और फ़ज़ा से भी बाख़बर है और अपने अन्दर के बदल ते हुए मौसमों से भी ला इल्म नहीं..इस हस्सास और संजीदा शायरा को अहसास है कि एक एसे दौर में जहाँ किसी को किसी के साथ हंसने की भी फ़ुर्सत नहीं किसी साथ रोने वाले की तलाश ओ जुस्तजू किस कदर बेमआनी और ग़ैर यक़ीनी है... सुमन मोहब्बत की शायरा हैं..वो मोहब्बत को इबादत और इबादत को मोहब्बत समझती हैं इनके नज़दीक दरे महबूब पर सर झुकाना ही मे'राज ए मोहब्बत और अज़मत ए इबादत है... हम मोहब्बत को इबादत की तरह करते हैं.. और इबादत भी मोहब्बत की तरह करते हैं... तुम युंही आइना बने रहना.. मैं तुम्हें देख कर संवरती हूँ..

सुमन जानती हैं कि शायरी अमल, रद्दे अमल और शदीद रद्दे अमल से इबारत है...महबूब की बे एतनाई और बे वफ़ाई के रद्दे अमल में ड्रॉइंग रूम की मेज़ से महबूब की तस्वीर हटा देने या तस्वीर जला देने का रद्दे अमल अहसास की शिद्दत पर मुनहसिर है लेकिन सुमन महबूब की तस्वीर हटाए और जलाए बग़ैर ही अपनी तनहाइयों के ग़ार में उतरती हैं और खुद ग़म की तस्वीर बन जाती हैं और फिर अपनी तनहाइयों को गनीमत जान कर इस लिये शुक्र अदा करती हैं कि गोशा ए तन्हाई में इंसान कम से कम खुल कर आँसू तो बहा सकता है.... हमारे गाँव की गलियों में हर दम धूल उड़ती है... मगर दामन हवाओं का कभी मैला नहीं होता... सुमन ढींगरा की शायरी में रोमानी खयालात की फ़रावानी के साथ साथ मुआशरत और सियासत के वो मसअले भी मौजूद हैं जिनसे नज़र बचा कर गुज़रना किसी हस्सास क़लमकार के लिये मुम्किन नहीं.. कमाल ए हुनरमन्दी ये है कि सुमन निसाई एहसासात को रोशनाई और जज़्बात को गोयाई अता करते हुए भी उस लिसानी तहज़ीब का दामन नहीं छोड़तीं जो अच्छी और सच्ची शायरी के लिये असास फ़राहम करती है...हमारे अहद के बेशतर शायर उस हुनरमन्दी से वाक़िफ़ हैं जो किसी फ़िक्र और खयाल को शे'र में ढाल कर लोगों के जज़्बात की तस्कीन करती है.. ये हुनरमन्दी क़लमकारों को शौहरतों से तो नवाज़ती है लेकिन आज़मतों से महरूम रखती है...सुमन ढींगरा का इम्तियाज़ यही है कि वो शे'री डिस्कोर्स से भी वाक़िफ़ हैं और इनके पास तहज़ीब ए ग़म का सलीक़ा और रंज ओ अलम का वो शऊर भी है जो शायरी को अज़मत ओ आफ़ाक़ियत अता करता है..यही सबब है कि सुमन अपने लम्हा ए विसाल में वारफ़्तगी,सुपुर्दगी और सरशारी की इंतहाओं तक पहुँचती हैं और लम्हा ए हिज्र में मीर और मीरा के आँसुओं की अमानत दार बन जाती हैं यही तो वो आँसू हैं जो ज़िन्दगी के काग़ज़ को नम रखते हैं.....

लखनऊ

साहित्य साधिका सुमन ढींगरा दुग्गल

डॉ.विकल

सुमन ढींगरा दुग्गल ऐसी साहित्य साधिका हैं, जिन्हें अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति अपनी तरह से करने की शक्ति ईश्वर ने दी है। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' की उक्ति को सार्थक करती हुई सुमन का कविताओं के प्रति रुझान उनके विद्यालयीन जीवन से ही रहा, जो समय की अनुकूलता पाकर उन की प्रौढ़ावस्था में पल्लवित हुआ। गीत, ग़ज़ल, दोहे, भजन के साथ-साथ मुक्त छंद रचनाओं से अपनी साहित्यिक यात्रा को गति देती हुई सुमन ढींगरा दुग्गल ने सोशल मिडिया के विभिन्न मंचों पर अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराते हुए अपनी रचनात्मकता को पुष्ट किया। यह सुखद बात है कि जिस तन्मयता से गीतों का सृजन किया उतनी ही तन्मयता से ग़ज़ल के शेरों को भी सँवारा। वर्ष २०१४ से उन्होंने अपनी साहित्य साधना का रूख ग़ज़लों की ओर मोड़ दिया जिस का सुखद परिणाम है उन का ग़ज़ल संग्रह 'गुंचे'

ग़ज़ल को मुख्य धारा में लेकर चलने में सुमन ढींगरा दुग्गल को हालांकि अधिक समय नहीं हुआ है, लेकिन ग़ज़ल के लिए ज़रूरी बातों के प्रति उन की सतर्कता आश्वस्त करती है। ग़ज़ल विधा के ज्ञानकारों ने यूं तो ग़ज़ल की तमाम बारीकियों को ज़रूरी माना है, लेकिन उन में इब्हाम, तगज्जुल, और बह्रों को अनिवार्य माना गया है। ग़ज़लें कहते हुए सुमन ढींगरा दुग्गल ने बह्रों के बारे में यथासम्भव सतर्कता और सावधानी का परिचय दिया है। इब्हाम (सांकेतिकता) समूचे काव्य का बहुत अहम हिस्सा माना जाता है। कोई भी बात सीधे सीधे कही जाने परवह असर नहीं रख पाती, जितना सांकेतिकता के माध्यम से। इस दृष्टि से सुमन ढींगरा दुग्गल की ग़ज़लों के शेर संतोषप्रद हैं। उन का एक शेर दृष्टव्य है---

ज़िंदगी में जो भी रौनक है वो सारी तुम से है
ज़िंदगी में तुम नहीं होंगे तो क्या रह जाएगा।

आज की भागम-भाग ज़िंदगी में, हम इतने व्यस्त हो चुके हैं कि अपने खुद के अलावा हमें हर बात का ध्यान रहता है। इसी तरह की सुमन ढींगरा दुग्गल का यह शेर बहुत सहज ढग से एक बड़ी बात कहने में सक्षम हुआ है। इसी तरह से यह एक और शेर भी खासतौर पर देखा जा सकता है---

क्यूँ यहाँ हूँ कहाँ है अब जाना
खुद से अक्सर सवाल करती हूँ।

संग्रह के अनेकानेक शेर सुमन ढींगरा दुग्गल के इस फन के गवाह हैं। ग़ज़ल कहने के लिए जो अगली महत्वपूर्ण ज़रूरत है वह तगज्जुल। सुमन ढींगरा दुग्गल ने ग़ज़लों के शेर कहते हुए ज़माने को दूर-दूर तक देखने की भरपूर कोशिश की है। इसी के चल ते उन्होंने कभी देशभक्ति को विषय बनाया है तो कहीं दार्शनिकता के पुट उनके शेरों में दिखते हैं। राष्ट्र के नाम समर्पित उन के ये शेर दृष्टव्य हैं---

जान दे देंगे अगर जान पर बन आएगी,
सर नगूं हम ये तिरंगा नहीं होने देंगे।

खाक़ में मिल भी गये हम तो कोई बात नहीं,
ऐ वतन हम तुझे रूस्वा नहीं होने देंगे।

तह में दरिया की उतरना नहीं आता जिनको,
उन की तक़दीर में सीमाब नहीं आते हैं।

हर एक कवि या शायर का अपना एक स्वभाव होता है। वह तमाम विषयों के बीच अपनी नज़र दौड़ाता है, उन पर क़लम भी चलाता है लेकिन उस का एक केन्द्रीय भाव भी होता है। सुमन ढींगरा दुग्गल की ग़ज़लों के बीच से गुज़रते हुए उन का भी केन्द्रीय भाव उभर कर सामने आता है और वह है विरह की वेदना। यह बहुत स्वाभाविक है कि जब केन्द्रीय भाव रचनाकार की कलम से उकेरा जाएगा तो उस के रंग भी बहुत चटक होंगे। सुमन ढींगरा दुग्गल के शेरों में इस विरह वेदना को जगह- जगह खूबसूरती के साथ देखा जा सकता है। मुहब्बत की सार्थकता बयान करते हुए वह कहती हैं

आँधियाँ नाकाम हो जाएंगी इक दिन देखना,
ये मुहब्बत का दिया जलता हुआ रह जाएगा।

लेकिन वर्तमान समाज की भौतिकतावादी अन्धी दौड़ में तमाम रिश्ते तार-तार होते जा रहे हैं। नाम के रिश्ते बचे हैं, जिनमें संवेदना की आँच नहीं बची है। तब सुमन ढींगरा दुग्गल इस बात पर चिंता करती हुई शेर कहती हैं---

वक्त के साथ हुए रेत के जैसे रिश्ते,
अब वो ज़ज़्बात में सैलाब नहीं आते हैं।

शायरा को इस बात पर अफसोस भी होता है कि सारी कोशिशें भी पत्थर के दिल में अहसास की खुशबू पैदा नहीं कर सकीं और वह शेर कहती हैं--

वो जो पत्थर था उसे फूल न कर पाये 'सुमन'
हो गये इश्क़ में नाकाम ये सारे आँसू।

संग्रह की ग़ज़लों में जहाँ एक ओर बहुतायत में मुहब्बत के अनेक कोण देखने को मिलते हैं, वहीं सुमन ढींगरा दुग्गल ज़माने को नज़दीक से देखते हुए कहती हैं

वो लोग जिन्हें अपनी बुलन्दी का नशा है,
वो सबकी निगाहों से उतर जाएंगे इक दिन।

हम बेटियों को छोड़ के माँ बाप का आँगन,
जाना तो है दुश्वार मगर जाएंगे इक दिन।

सुमन ढींगरा दुग्गल का जन्म पंजाब में हुआ, शिक्षा-दीक्षा गोरखपुर में हुई और वर्तमान में लंबे समय से इलाहाबाद में रह रही हैं। भौगोलिक विविधताओं से गुज़रने का यह असर उन की भाषा में साफ़-साफ़ दिखाई देता है। उन्होंने हिन्दी शब्दों के साथ-साथ उर्दू शब्दों का प्रयोग भी बहुतायत में किया। उर्दू के इस प्रयोग को सोशल मीडिया का प्रभाव भी कहा जा सकता है।
ग़ज़ल संग्रह 'गुंचे' के सुमन ढींगरा दुग्गल की कोमल भावनाओं का महकता हुआ गुलदस्ता ग़ज़ल प्रेमियों के सामने है। मैं उन्हें उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

ग़ज़लकारा सुमन ढींगरा दुग्गल

विजय कुमार स्वर्णकार

सुमन ढींगरा दुग्गल जी ने आज के ग़ज़ल परंपरा का निर्वाह पूरे सम्मान से किया है। उसे नये नये सिंगार के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता और दक्षता भी है।
ग़ज़ल में विषय की विविधता की असीम संभावनाओं का आप ने बखूबी दोहन किया है। जहाँ एक ओर आम आदमी की दैनिक परेशानियों से लेकर दूरस्थ छोर पर खड़े व्यक्ति की स्थिति को आप ने अपने अशआर में समेटा है, वहीं व्यक्तिगत पीड़ा और संघर्ष को स्वर देते हुए उसे पूरी व्यवस्था से जोड़ दिया है--

आँखों के रास्ते से निकलते हैं रंज़ ओ ग़म
अच्छा है इस मकान में कुछ खिड़कियाँ भी हैं ।

देह की खिड़कियाँ आँखें हैं और मकान की आँखें खिड़कियाँ हैं। इन से रास्ते निकल ते हैं। यह बोध हमें कितनी व्यंजनाओं से भर देता है

तुम यूँ ही आईना बने रहना
मैं तुम्हें देख कर सँवरती हूँ

स्वीकृति, निवेदन और कृतज्ञता एक साथ। शेर में ऐसा असर पैदा करना आसान नहीं होता।

खुद में ही डूबती उभरती हूँ
जाने किस को तलाश करती हूँ ।

सच्चा अन्वेषण वही है जिस में क्या मिलना चाहिए, यह पूर्वनिर्धारित नहीं होता। बहुत ही अच्छा शेर हुआ है।
ग़ज़ल संग्रह 'गुंचे ' में अनेक अशआर आप को सुमन जी की लेखनी की ताकत का एहसास कराते हैं। यहाँ रवानी है, तगज्जुल है, अनुभूति की सूक्ष्मता है

हम खयालों में तेरे, शाम को सूरज की तरह
जब भी तन्हाई से बेज़ार हुए डूब गए ।

क्या खूब! ऐसी कई तस्वीरें सामने आती हैं सुमन जी के अशआर पढते हुए। शब्दों का सटीक चयन, उन के क्रम और बोध को कुशलतापूर्वक निभाकर आप ने शेर कहे हैं।

मोहब्बत का पैगाम है ढींगरा की शायरी

इब्राहिम अश्क़

सुमन ढींगरा दुग्गल काफ़ी अर्से से कविताएँ लिख रही हैं जो फेसबुक पर लोगों की पसंद का सबब बनती रही हैं और उन को इस की भरपूर दाद भी मिलती रही है।
२०१४ और २०१५ से सुमन ने ग़ज़ल के मैदान में कदम रखा और बहुत कम अर्से में ग़ज़ल की मेयार शायरी करने के हुनर से वाकिफ़ हो गयी और इस सफर में उन की ल गन, मेहनत खुदा दाद सलाहियत दिखने ल गी। चंद अशआर मुलाहिज़ा हों--

ज़िंदगी जाल में यूँ तू ने फँसाया है मुझे
फड़फड़ाती हूँ तो कुछ और उलझ जाती हूँ।

खुद में ही डूबती उभरती हूँ
जाने किस को तलाश करती हूँ ।

हर क़दम पर खुशी मयस्सर है
आज कल मैं हूँ इम्तिहान में क्या?

हमें कफ़स न नज़र आएगा रिवाज़ों का
मगर अभी भी पड़ीं बेड़ियाँ बहुत सी हैं।

किसी की माँग उजड़ने की जब खबर आई
तो एक एक सितारे की आँख भर आई ।

आदमी ही आदमी का दुश्मन है
अब किसी को किसी से प्यार नहीं

अशआर में ऐसी चमक ऐसी जान इतनी जल्दी पैदा नहीं होती अगर शायर के यहाँ संजीदगी और ख़याल-ओ-फ़ैल की वुसअत और गहराई न हो।

उर्दू में ख़ातीन का हिस्सा कम से कम ही सही लेकिन जब भी यह शायरी मंज़र-ए-आम पर आई है तो उस ने अहल-ए-फ़न और हुनर वालों को चौंकाया ज़रूर है और ये आवाज़ अलग अलग अंदाज़ से पहचानी गयी है जैसे परवीन शाकिर की आवाज़। सुमन के यहाँ भी वही ज़रखरेज़ ज़मीन मौजूद है। अब ये किन मंज़िलों तक सफ़र कर सकेंगी ये तो आने वाला वक्त बताएगा। फिलहाल आप उन के इन अशआर से लुत्फ़ उठाइए---

दुनिया का इल्म सब का अधूरा है आज तक
हालांकि ज़ीस्त रोज़ नयी इक किताब है।

हैं लज़्ज़त-ए-हयात तो कुछ तल्खियाँ भी हैं
हँसने के साथ साथ यहाँ सिसकियाँ भी हैं।

मर के भी ज़िंदा रहेंगे सब के दिल में हम 'सुमन'
हम न होंगे पर हमारा तज़किरा रह जाएगा।

एक पैग़ाम है मुहब्बत का
बाक़ी मुरली में क्या अजान में क्या?

हमारे गाँव की गलियों में हरदम धूल उड़ती है
मगर दामन हवाओं का कभी मैला नहीं होता ।

सुमन ढींगरा दुग्गल की ये तमाम शायरी अब एक किताबी शक्ल 'गुंचे' के नाम से मंज़र-ए-आम पर
है। साहिब-ए-किताब होना समझ और इल्म-ओ-अदब की दुनिया में एक मर्तबे को पाना है। इस मुबारक मौक़े पर मैं सुमन ढींगरा दुग्गल को दिली मुबारकबाद पेश करता हूँ और मुझे पूरी उम्मीद है कि उन की शायरी हर खास-ओ-आम में मकबूलियत हासिल करेगी और सुमन ढींगरा दुग्गल का यह फिल्मी सफ़र और तेजी से रवां दवां होगा और हमारी तहज़ीब को इस से फ़रोग़ मिलेगा, अदब में इज़ाफ़ा होगा।
आखरि में यही कहूंगा कि मेरी तमाम दुआएं और नेक तमन्नाएं सुमन के लिए हैं। वो खूब तरक़्क़ी करें और ग़ज़ल की दुनिया को माल ामाल करें। अपने एक शेर पर मैं अपनी बात मुक़म्मल करता हूँ--

बरंगे गुल-ए-साद बरंगे चमन
देखने वालों ने हर लुत्फ़-ए-नज़र से देखा।

मीरा रोड, मुम्बई

सुमन ढींगरा दुग्गल की रचनाएँ

सुबह के स्वागत में कुछ दोहे

हे ईश्वर विनती करूँ, लिये प्रकंपित गात ।
करुणा दृष्टि बनी रहे , मांगू वर ये तात।।

जगमग ऊषा सुन्दरी,चली धरा की ओर।
छलका कलश अबीर का, उतरी हँसती भोर।।

रात चली देकर कँवल, तारे लिए समेट।
विहँसी तब निर्मल धरा, सखि होगी कल भेंट ।।

पाती अलि की ज्यों मिली, महके पढ़कर फूल ।
मुस्काई खिलती कली, हँसी गया अलि भूल ।।

मुदित हुए खर पात हैं, चकवा हुआ उदास ।
नृत्य करें किरणें चपल , पवन करे मृदु हास ।।

खोज

दुविधा में हूँ कैसे करूँ
मैं निज भावों को अभिव्यक्त
थाम कर चलूँ जिनकी अँगुलियां
सबल वो रसीले शब्द नहीं मिलते

अनछुए, कोमल से शब्द,
पर जो हों अर्थ में सशक्त
उकेरे चित्र सम,मन की खुशी पीर
वो चितेरे शब्द नहीं मिलते

पन्नों पर अंकित हो कर
जो कर दे लिखे पल जीवन्त
मेरी लेखनी को,
तिलस्मी वो न्यारे शब्द नहीं मिलते

मृदु भावों को खुद में गूँथ कर
जो कर दें पाठकों को अनुरक्त
हँसा दें, रूला दें जो,
वो गहरे शब्द नहीं मिलते

जाने कहाँ गये मेरी मंजूषा के
शब्द सुकुमार, सार्थक
रचना को दे जो रूप मनोरम,
वो खोये शब्द नहीं मिलते

झकझोर कर जगा दे जो
मानवीय भावों को उसी वक्त
भाव-प्रवण, अभिनव, अनूप वो
सलोने शब्द नहीं मिलते

मन पतंग

मन पतंग को उड़ जाने दो
नील गगन की ओर
खींचो मत ये डोर

जीवन है अनबूझ पहेली कब सुलझेगी
जितना बाँधोगे रस्मों में उतनी ही उलझेगी
हाथ न आयेगा इसका कोई छोर

मन पतंग को उड़ जाने दो
नील गगन की ओर
खींचो मत यह डोर

है आकाश अपरिमित कितना,
नाप न पाये कोई
कितना गहरा सागर है
ये भाँप न पाये कोई
बूँदें उठ कर सागर से
पहुँचे अंबर की ओर

मन पतंग को उड़ जाने दो
नील गगन की ओर
खींचो मत यह डोर

सतरंगी सपनों का तारा
उड़ जायेगा उड़ जाने दो
गिरके टूटेगा फिर खुद ही
जुड़ जायेगा जुड़ जाने दो।
छू लेने दो भोर

मन पतंग को उड़ जाने दो
नील गगन की ओर
खींचों मत ये डोर

प्रभु तेरी रचना

प्रभु तेरी अनुपम रचना भरती है
मेरे मन-मानस में मोद निरंतर

संजीवनी रश्मियाँ दिनकर की
लुटाती हैं स्वर्णिम आभा भर- भर

हरितिमा के वातायान से झांकते हैं
रंगीन , कोमल प्रसून गुच्छ सुंदर

गूँजते हैं वृंदो के मधुर कलरव गान
गाते हैं नित्य प्रभाती, चहचहाकर

करते हैं अभ्यर्थना नित्य हरसिंगार,
सजाते हैं ये रवि - पथ को झरकर

सद्धःस्नात पादपों के ओसकण
गिराता है चंचल समीर छू- छू कर

इठलाता पवन खेलता,लुटाता है
पुष्पों के मकरंद, सुवास हँस कर

तेज फैला कर धरा पर पूरा करता
सूर्य- सारथी शनैः शनैः दिवस चक्र

विदा देने आ पहुँची सुरमई सांझ
गगन पर टाँक रही है तारे सुंदर

दीपों को प्रज्वलित कर के निशा
जग को देती है विश्राम का अवसर

ईश -कृपा बताने को सुनाई देती हैं
घण्टियां,अजान,बानी शुचिकर

प्रभु बहुत कष्टकारी है यह मानव जीवन
फिर भी मैं चाहूँ पुनः जीने का अवसर

मोहित सी किसी वादी में तितली बन उड़ती रहूं
छूती रहूँ तेरी प्रभु तेरी मनोरम रचना हुलसकर

धूप

चली आई धरा पर फूलों का उबटन लगाती धूप
नवोढा सी मेरे आँगन भी उतरी है लजाती धूप

बचा कर आँख सूरज से वो आई धरती से मिलने
लजीली कलियों को धीरे से कुछ कह कर हँसाती धूप

चिरईया सी फुदकती है सघन कुंजों की डालों पर
कभी फुनगी से झर के खेल जादू का दिखाती धूप

पवन से रूठ कर यह जा छिपी अमराई के भीतर
दबे पाँवों से फिर बाहर आ के खुद मान जाती धूप

चुनरिया ओढे सतरंगी चली है वन को इठलाती
वहाँ फूलों पे अपने रंगों की कूची चलाती धूप

कँवल की पँखुड़ियों में उतरी है वह लहरों से मिलने
नदी के जल से सकुचाती सी निकली है नहाती धूप

हो कर वह क्लांत वापस जा रही है बादलों के देस
सुबह फिर आऊँगी मैं कह गयी है सब को जाती धूप

माँ शारदे के चरणों में

माँ वरदायनि हम पर कृपा करना।
मानस से अज्ञान तिमिर हरना।
माँ वरदायनि हम पर कृपा करना।

ज्योति कलश से जो छलकेगा
आँचल में भरना-
माँ वरदायनि हम पर कृपा करना।

वाणी पर संयम रहे, मुख में विमल शब्द धरना
माँ वरदायनि हम पर कृपा करना

हँस वाहिनी माँ शारदे, उर में आनंद भरना
माँ वरदायनि हम पर कृपा करना

अर्थ हीन है मेरा ये जीवन, माँ नवल अर्थ धरना
माँ वरदायनि हम पर कृपा करना।

नतमस्तक हो विनती करूँ मैं,
वरद्-हस्त रखना
माँ वरदायनि हम पर कृपा करना

मेरे कान्हा कभी तो आओ

मेरे कान्हा कभी तो आओ अपने ब्रज की गलियन में
निहारूँ राह तेरी बावरी बन कर मैं मथुबन में

कहो बनवारी तुम ने क्यों मुझे बांधा है बंधन में
तुम्हारी प्रीत ले कर नित भटकती हूँ मैं कानन में

तड़पती हूँ मैं निस दिन सुनने को तेरी बँसी की धुन
तड़प ऐसी नहीं तुम को मिलेगी दूजी विरहन में

ये परछाई भी डसती है मुझे जब से गये हो तुम
अकेला छोड़कर गोपाल निर्जन याद के वन में

कटी है रैन तृष्णा में जरा विपदा सुनो मेरी
नयन ढूँढे तुझे मोहन, बसे हो तुम ही नैनन में

तेरी पदचाप सुनने को मैं हूँ व्याकुल मेरे कान्हा
तेरे बिन दूसरा कोई नहीं है मेरी धड़कन में

बुलाती हैं तुम्हें मोहन ये सूनी ब्रज की गलियाँ भी
चले आओ कि अब तो पड़ गये हैं झूले सावन में

माँ

सुधियों में हैं कहानियाँ जो
तुमने सर सहलाते थीं सुनाईं
तरंगित हैं वो लोरियाँ जो
मुझे अंक में भर के थी गाईं

तुम्हारी कहानियों की लय पर
माँ मेरा बचपन था झूला
याद है गिरता-उठता
नन्ही उत्सुकता का हिंडोला

रोम-रोम में बहती है
आज भी तेरे हाथों की उष्मता
पग-पग राह दिखाती है
स्नेहिल डाँट में छिपी ममता

आज वही कहानियाँ जब नाती,
पोतों को सुनाती हूँ
तब तुम्हारे अस्तित्व,
अपने अस्तित्व की उन में गाँठ लगाती हूँ

कभी जो अमूल्य स्नेह थाती
तुम सौंप गयी थी मुझे
उन्हें सब में वितरित कर भी
परिपूर्ण लौटा रही हूँ तुझे

अनुभूति

बिखरे हैं जीवन चरण पर अनगिन दिन रात मेरे
प्रातः जैसे झर जाते हैं सुवासित हरसिंगार बहुतेरे

ढूँढती थी जाने क्या जीवन के श्वेत श्यामल जल में
अव्यक्त खोज बनी रहती थी सदा मेरे हर इक पल में

जोड़ा करती थी हाथ मैं, नित्य दिव्य पलों के संधान में
कोई मार्ग अब तो हो प्रकाशित मेरे निर्बल संज्ञान में

अपने निरर्थक से जीवन का ध्येय समझ नहीं पाती थी
उद्वगिन होकर अपने अराध्य को
बारम्बार शीश नवाती थी

आध्यात्मिक वीथियों में भ्रमण कर रही जब मैं नमित
बहुआयामी सत्य सी अलौकिक सत्ता तब हुई अवतरित

दिव्य शब्द मस्तक पर धर कर बोले सतगुरु तारणहार
श्वास- श्वास में नाम यह जप ले
तभी होगा तेरा बेड़ा पार

प्रज्ञा चक्षु खुले तो जाना प्रभु सब में है समाया
सतगुरु कृपा से उस ज्योतिर्मय को स्वयं में भी पाया
सतगुरु के चरणों में ...

लफ़्ज़ तहरीर से बँधे हुए हैं

लफ़्ज़ तहरीर से बँधे हुए हैं
ख़्वाब ताबीर से बँधे हुए हैं

दर्द होगा हमारी ग़ज़लों में
क्यूँ कि हम मीर से बँधे हुए हैं

हाय रांझा के दिल के सब अरमान
एक ही हीर से बँधे हुए हैं

जो मुसव्विर हैं तेरी दुनिया में
एक तस्वीर से बँधे हुए हैं

हम जुदा तुम से हो नहीं सकते
ऐसी तदबीर से बँधे हुए हैं

हम को जल्दी पड़ी है जाने की
पाँव ताख़ीर से बँधे हुए हैं

है मयस्सर उन्हीं को आज़ादी
वो जो ज़ंजीर से बँधे हुए हैं

जितने रिश्ते हैं सब 'सुमन' मेरे
एक तासीर से बँधे हुए हैं

इन आँखों को पानी कौन देता है

मेरे हँसते ही इन आँखों को पानी कौन देता है
खुशी के साथ ये ग़म की कहानी कौन देता है

किसी को चीज़ कोई बे-मआनी कौन देता है
भरी बरसात में पौदों को पानी कौन देता है

गुलों में रंग आखरि कौन भरता है बहारों में
चुनर बरसात में धरती को धानी कौन देता है

उतरती हैं कहाँ से शोखयिाँ बचपन की कलियों में
फिर इस के बाद में इनको जवानी कौन देता है

चमन में जिस के आते ही गुलों के रंग उड़ जायें
एक ऐसे बागबाँ को बागबानी कौन देता है

तेरे मासूम बंदों को हमेशा ग़म ही मिलते हैं
तेरी दुनिया में इनको शादमानी कौन देता है

जहाँ ख़ामोश रहती है ज़बाँ इक़रार - ए-उल्फ़त पर
वहीं आँखों को ये तर्ज़-ए-ज़बानी कौन देता है

हमारे दिन 'सुमन' ये किस के चेहरे से मुनव्वर हैं
हमारी शब को बू-ए- रात रानी कौन देता है।।

अँधेरे मे वो खुद् को डाले पड़े हैं

अँधेरे मे वो खुद् को डाले पड़े हैं
कि खुद् जिन के पीछे उजाले पड़े हैं

मिशन है पढ़ाई लिखाई का जारी
मगर दर्स गाहों में ताले पड़े हैं

हवा मास्क पहने हुए चल रही है
हमें साँस लेने के लाले पड़े हैं

असली चेहरा

आज सुबह से ही मीता सत्संग की तैयारियों में जुटी थी। सत्संग में कथा और भजनों के बाद चाय नाश्ते का कार्यक्रम होता था। मीता ने अपनी शान बढ़ाने के लिए सुबह से पाक कला में निपुण अपनी सास कान्ति देवी को सुस्वादु नाश्ते बनाने के लिए रसोई में झोंक रखा था। मीता यूँ तो अपनी सास का कोई आदर नहीं करती थी पर समाज में आदर्श बहू कहलाने की ललक में दूसरों के सामने सम्मान करने का दिखावा करती थी।

शाम को आयोजित सत्संग का कार्यक्रम बेहद सफल रहा। मीता की सहेलियों ने स्वादिष्ट नाश्ते की बहुत प्रशंसा की। जिस का श्रेय स्वयं लेते हुए मीता ने सब का धन्यवाद किया। कुछ महिलाओं ने उस के नम्र स्वभाव और सास के प्रति सम्मान को भी सराहा। धीरे-धीरे सब महिलाएं चली गयीं। थके कदमों से सास कान्ति देवी कमरे में बिखरे जूठे बर्तन रसोई घर में ले जा कर रखने लगी। थके, अशक्त हाथों में पकड़ी हुई ट्रे काँप रही थी। अचानक हाथ की ट्रे एक ओर झुक गयी जिस से दो कप नीचे गिर कर टूट गये। काँच टूटने की आवाज़ सुन कर कमरे में आराम करती हुई मीता रसोई घर में आ कर सास को खरी खोटी सुनाने लगी। मीता की सहेली रीना जो अपना छूटा हुई मोबाइल लेने वापिस आई थी उस ने दरवाज़े से ही मीता के कड़वे, अपमानजनक वाक्यों को सुन कर सोचा तो यह है इस आदर्शवादी बहू का असली चेहरा ।

सुमन ढींगरा दुग्गल

सुमन ढींगरा दुग्गल की रचनाएँ

हमें भी ये मालूम है सच न होंगे
मगर ख़्वाब आँखों में पाले, पड़े हैं

चमन ने बिखेरे हैं गुल और काँटे
यहाँ से जो चाहे उठा ले, पड़े हैं

दिमागी सवालों पे दिल कह रहा है
खुदाया ये हम किस के पाले पड़े हैं

ज़माने में जो लोग सच बोलते हैं
उन्हीं की ज़बानों पे छाले पड़े हैं

'सुमन एक तुम ही नहीं खूबरू हो
यहाँ और भी हुस्न वाले पड़े हैं

आई न हमको नींद

आई न हमको नींद जो सोचा है रात को
तारों से आगे कौन बुलाता है रात को

जुगनू हूँ मैं, ये नाज़ है मुझ को कि आज फिर
सूरज मेरी तलाश मे निकला है रात को

ऐ इश्क़ तेरी नींद से बनती नहीं है क्या
क्यूँ आशिकों को ऐसे जगाता है रात को

ताबीर उसकी ढूँढने निकली हूँ आज मैं
आँखों ने मेरी ख़्वाब जो पाला है रात को

कैसे कहें कि चाँद सा चेहरा वो आपका
आँखों से मेरी नींद चुराता है रात को

सपने हसीन जब भी सजाती है मेरी आँख
चेहरा तुम्हारा ख़्वाब में आता है रात को

मसरूफ़ियत से होती है यादों में कुछ कमी
पर चाँद तेरी याद दिलाता है रात को

दस्तक हवा ने दी कभी कुंडी हिली अगर
तो दिल हमारा ज़ोर से धड़का है रात को

गज़ल

अय्याम-ए - सफ़र हैं ये गुज़र जाएंगे इक दिन
हम आये जिधर से हैं उधर जाएंगे इक दिन

जितना भी नवाज़ा है हमें, तू ने कसम से
वो सब, तेरी दहलीज़ पे धर जाएंगे इक दिन

क़िस्मत से, जो मिल जाये, कभी आइना इन को
धुंधले से ये चेहरे भी सँवर जाएंगे इक दिन

ऐसा भी कभी होगा, ये मालूम नहीं था
जीने की, तमन्ना में ही मर जाएंगे इक दिन

वो लोग जिन्हें, अपनी बुलंदी का नशा है
वो सब की, निगाहों से, उतर जाएंगे इक दिन

हम बेटियों को, छोड़ के, माँ बाप का आँगन
जाना तो है दुश्वार मगर जाएंगे इक दिन

जो आप ने रंजिश में मेरे नाम लिखे हैं
इल्ज़ाम वो सब आप के सर जाएंगे इक दिन

औक़ात न भूलें वो 'सुमन' जिनको रहा याद
हम वक्त की मसनद से उतर जाएंगे इक दिन

देखते रह गए

वस्ल की शिद्दतें देखते रह गए
डूबती हसरतें देखते रह गए

वो इरादों में तरमीम करते रहे
हम बदलती रुतें देखते रह गए

उन के जाने का ग़म फिर न आने का ग़म
आफ़तें आफ़तें देखते रह गए

दर्द-ए-दिल में इज़ाफ़ा हुआ दिन-ब-दिन
इश्क़ की बरक़तें देखते रह गए

खुश हुए वो कि बरसी घटा झूम कर
हम टपकती छतें देखते रह गए

जो दिये खुद 'सुमन' तुम ने रौशन किए
तुम पे वो ज़ुल्मतें देखते रह गए

मुँह छुपा कर

मुँह छुपा कर किसी भी कोने में
कितनी आसानियाँ हैं रोने में

सिर्फ अपने लिए जो जीते हैं
उन का होना भी है न होने में

अब उसे बोझ सब समझते हैं
जिस की गुज़री है बोझ ढोने में

आज भी घर मेरा मु'अत्तर है
माँ की खुशबू है कोने कोने में

जिस को परवरदिगार कहते हैं
वो तो मिलता है खुद को खोने में

मुझ से सब ने निगाह फेरी है
ये हुआ है तुम्हारा होने में

तुम सुमन यूँ ही अश्क़बार रहो
वक्त लगता है दाग़ धोने में

खुद़ पे गुज़रे अज़ाब लिखती हूँ

खुद़ पे गुज़रे अज़ाब लिखती हूँ
आज कर के हिसाब लिखती हूँ

बहर- ए - दिल में है इक सन्नाटा
और मैं इज़्तिराब लिखती हूँ

खुद़ को ज़र्रे से मुख्तसर कर के
आप को आफ़ताब लिखती हूँ

जब कोई फूल मुस्कुराता है
उस को अपना शबाब लिखती हूँ

नाज़ कर कर के आज कल खुद़ को
आपका इंतिखाब़ लिखती हूँ

मेरी अच्छाई की सनद ये है
खुद़ को सबसे खराब़ लिखती हूँ

उन को कोई 'सुमन' लिखे कुछ भी
मैं वफ़ा की किताब लिखती हूँ

चलीं आँधियाँ भी हैं

हैं लज़्ज़त-ए-हयात तो कुछ तल्खियाँ भी हैं
हँसने के साथ साथ यहाँ सिसकियाँ भी हैं

आँखों के रास्ते से निकलते हैं रंज-ओ-ग़म
अच्छा है इस मकान में कुछ खिड़कियाँ भी हैं

कहते हैं लोग तुझ को गुल-ए-बदनसीब भी
सुनती हूँ जुस्तजू में तेरी तितलियाँ भी हैं

तूफान भी शबाब पे आने लगा उधर
बेताब डूबने को इधर कश्तियाँ भी हैं

छेड़ा न कीजिए मुझे मैं ऐसी शम'अ हूँ
दामन बचा के जिस से चलीं आँधियाँ भी हैं

आतिश- फ़िशां से दूर रहा कर ज़रा 'सुमन'
सूरज के पास देख कहीं बस्तियाँ भी हैं

मैं तुम्हें देख कर सँवरती हूँ

खुद़ में ही डूबती उभरती हूँ
जाने किस को तलाश करती हूँ

दिल में जीने की आरज़ू ले कर
मैं कई बार रोज़ मरती हूँ

भर न जाए ये ज़ख्म़ - ए- दिल मेरा
इसलिए छेड़छाड़ करती हूँ

तुम यूँ ही आईना बने रहना
मैं तुम्हें देख कर सँवरती हूँ

खामुशी मुझ को रास आती है
इसलिए तोड़ने से डरती हूँ

क्यूँ यहाँ हूँ कहाँ है अब जाना
खुद़ से अक्सर सवाल करती हूँ

मैं गुरेज़ां हूँ खुद से कुछ ऐसे
अपने साये से भी मुकरती हूँ

उस की तस्वीर में' सुमन' अक्सर
मैं वफ़ाओं के रंग भरती हूँ

चाँद रक्स़ां है सितारे रक्स़ां

चाँद रक्स़ां है सितारे रक्स़ां
साथ राधा के हैं सारे रक्स़ां

ज़र्फ़ मिलता है जहाँ दरिया में
बस वहीं होते हैं धारे रक्स़ां

पाँव में फ़िक्र की जंज़ीर लिए
आज दुनिया में हैं सारे रक्स़ां

आज का रक़्स है रक़्स ए महफ़िल
तुम जो हो साथ हमारे रक्स़ां

रक्स़ सीखा है भँवर ने हम से
हम जो रहते हैं किनारे रक्स़ां

रक़्स करतीं हैं निगाहें मेरी
या खुदा हैं ये नज़ारे रक्स़ां

उन की ऊँगली के इशारे पे 'सुमन'
हम रहे साँझ सकारे रक्स़ां

रक्स़ां - नृत्य रत

वो दिन

छलक जाती हैं आँखें जब
भी हम फरियाद करते हैं
वो दिन क्या फिर न आयेंगे
जिन्हें हम याद करते हैं

वो उन का प्यार,
वो शेख़ ओ बराहमन याद आते हैं
कभी इक शाख़ पर थे दो
नशेमन याद आते हैं

खुशी मिलती थी
उस को जो किसी के काम आता था
किसी का दर्द लेकर किस क़दर
आराम आता था

वही हम हैं वही तुम हो
फिर इतना फ़ासला क्यूँ है?
सभी कुछ एक है तो फिर
ये दिल से दिल जुदा क्यूँ है?

कभी इस मुल्क़ की नज़दीक से
तस्वीर तो देखो
किसी के ख़्वाब की टूटी हुई
ताबीर तो देखो

खिज़ाँ का दौर इस दिल के
चमन से कैसे निकलेगा
हमारे मुल्क़ का सूरज गहन
से कैसे निकलेगा

'सुमन' दर्स-ए-मुहब्बत
यूँ परिंदे हम को देते हैं
कभी मंदिर में रहते हैं
कभी मस्जिद में रहते हैं

फिर मेरा दिल दुखा गयी बारिश

फिर मेरा दिल दुखा गयी बारिश
आ के तन- मन जला गई बारिश

तुम ने वादा किया था आने का
तुम से पहले ही आ गई बारिश

आँख भी रोई बादलों के संग
सारा काजल बहा गई बारिश

आ के तुम भी सजाओ माँग मेरी
सारी धरती सजा गई बारिश

हम को जी भर के भीग लेने दो
आज तन-मन को भा गई बारिश

रुत है झूलों की और फूलों की
याद बचपन दिला गई बारिश

बूँद के तीर तन पे चुभते हैं
प्यास दिल की बढा गई बारिश

कैसी नुदरत है इस की बूँदों में
स्वर्ग धरती बना गई बारिश।

जिस्म-ओ -जाँ सब 'सुमन' सुलग उठ्ठे
ज़हन-ओ- दिल पर जो छा गई बारिश

डूब गए

तैरते तैरते बेज़ार हुए डूब गए
हम मुहब्बत के गुनहगार हुए डूब गए

हम खय़ालों में तेरे शाम को सूरज की तरह
जब भी तन्हाई से बेज़ार हुए डूब गए

इश्क़ के बहर में जो डूब गए पार हुए
और जो लोग यहाँ पार हुए डूब गए

तुम से पहले भी कई चाँद यहाँ पर उभरे
जो सितारों के गुनहगार हुए डूब गए.

खुद़ पे नज़र इक बार वो डाले
फिर मुझ में सौ ऐब निकाले

बेच के अपने कंगन बाले
बच्चों को तालीम दिला ले

ऐसे इश्क़ से तौबा तौबा
जिस में पड़ गए जान के लाले

ये तेरी दिन रात जुदाई
डर है मुझ को मार न डाले

पैरों में ज़ंजीर पड़ी है
अपने रक्स़ की लाज बचा ले

अब्र-ए-करम के सब प्यासे हैं
ताल-तलैया नद्दी नाले

आओ 'सुमन' हम रब से माँगें
मुमकिन है वो बात न टाले

वो चाहिए न उस का पता चाहिए

वो चाहिए न उस का पता चाहिए मुझे
गुज़री हुई हयात से क्या चाहिए मुझे

आँखों में आँखे डाल के कहती है ज़िंदगी
मैं बेवफ़ा हूँ फिर भी वफ़ा चाहिए मुझे

ऐसे तो मेरी माँ की दुआ मुझ को कम नहीं
वैसे तो आप सब की दुआ चाहिए मुझे

अच्छा हुआ तुम्हीं से मुझे प्यार हो गया
तुम ने कहा था तेरा बुरा चाहिए मुझे

हो जाये मुझ से सारी खुदाई
खफ़ा तो क्या दुनिया में सिर्फ तेरी रज़ा चाहिए मुझे

मैं क्यूँ किसी की तर्ज़ पे आखरि चलूँ 'सुमन'
अपनी अदा जहां से जुदा चाहिए मुझे

कहीं हीर नुमायाँ

लैला कहीं शीरीं है कहीं हीर नुमायाँ
हर सिम्त मुहब्बत की है तस्वीर नुमायाँ

ओझल है निगाहों से जो तक़दीर का तारा
हो जाए अब ए कातिब-ए-तक़दीर नुमायाँ

जो ख़्वाब अँधेरे में बुने आँख ने मेरी
वो सब पे किए देती है ताबीर नुमायाँ

वो जिस में मुहब्बत ने यहाँ रंग भरे हैं
दुनिया में हुई है वही तस्वीर नुमायाँ

होठों को बनाया है तब्बसुम का अलमदार
और आँख में है दर्द की तस्वीर नुमायाँ

वो रक्स़ दिखावे के सिवा कुछ भी नहीं है
जिस रक्स़ पे हो पाँव की ज़ंजीर नुमायाँ

डूबा नहीं करते हैं 'सुमन' फ़िक्र के सूरज
इक़बाल नुमायाँ हैं कहीं मीर नुमायाँ

तेरी तहरीर करूँ

जब भी मैं कोई इनायत तेरी तहरीर करूँ
शुक्र बस तेरा अदा कातिब-ए-तक़दीर करूँ

ज़िंदगी धुन पे तेरी रक्स़ किए जाती हूँ
बात तो जब है कि मैं हसरतें ज़ंजीर करूँ

और भी ग़म हैं तेरे ग़म के सिवा इस दिल में
कौन सा ग़म मैं छुपाऊँ किसे तहरीर करूँ

आज कल घर से निकलने पे लगी पाबंदी
तुझ से मिलने के लिए कौन सी तदबीर करूँ

एक लम्हा तू मुहब्बत में मेरे नाम तो कर
ज़िंदगी अपनी तेरे नाम पे तहरीर करूँ

अम्न ही अम्न हो बस और ' सुमन' कुछ भी न हो
इक जहां ऐसा मुहब्बत का मैं तामीर करूँ

मंज़िलों का पता रास्तों से मिला

मंज़िलों का पता रास्तों से मिला
आँसुओं का पता कहकहों से मिला

मुस्तहब होती हैं ज़ीस्त में दूरियाँ
कुर्बतों का पता फ़ासलों से मिला

बेखबर ही रहे वक्त की चाल से
झुर्रियों का पता आईनों से मिला

सुमन ढींगरा दुग्गल की रचनाएँ

राहतें ज़िंदगी की मिली हैं मगर
राहतों का पता मुश्किलों से मिला

इससे पहले कहाँ जानते थे ये दर्द
रतजगों का पता फ़ुर्क़तों से मिला

ये अँधेरे उजालों की उम्मीद हैं
जुगनुओं का पता ज़ुल्मतों से मिला

कल समंदर की मौजों ने मुझ से कहा
वुसअतों का पता तो दिलों से मिला

आज अखबार में आई है ये खबर
क़ातिलों का पता कैमरों से मिला

जब' सुमन'वो दबे पाँव आए इधर
आहटों का पता धड़कनों से मिला

दिन कहाँ वो बहार फूलों के

दिन कहाँ वो बहार फूलों के
अब हैं दुश्मन हजार फूलों के

ग़म भी है ज़िंदगी का इक हिस्सा
साथ हैं जैसे खार फूलों के

बागबाँ बात क्या है काँटों का
हर तरफ हैं हिसार फूलों के

कह दो अहल-ए-चमन उदास न हो
लाएगी दिन बहार फूलों के

हाय गुलपोशियाँ सियासत में
जान लेते हैं हार फूलों के

लोग काँटों से बच के चलते हैं
हम हुए हैं शिकार फूलों के

सच है चेहरे उतार देता है
उसके रुख क़ा निखार फूलों के

कितने दिलकश हैं कितने प्यारे हैं
रंग परवरदिगार फूलों के

तुम्हारे सामने ठहरेगा माहताब कहाँ

तुम्हारे सामने ठहरेगा माहताब कहाँ
हसीं तुम्हारी तरह से ये बेहिसाब कहाँ

हमारे दिल की उमंगों का हाल मत पूछो
अब ऐसा बहर की मौजों में इज़्तिराब कहाँ

निगाह भर के तुम्हें देखने की हसरत है
मगर हमारी निगाहों में इतनी ताब कहाँ

जो आला ज़र्फ़ हैं वो खाक़सार हैं सारे
गुहर मिले तहे दरिया मगर हुबाब कहाँ

जिया से जिस की कोई ज़र्रा फैज़याब नहीं
वो आफ़ताब का धोखा है आफ़ताब कहाँ

किसी पे ऊँगली उठाई तो ये खयाल आया
हमारे जैसा जहां में कोई खराब कहाँ

हमारे घर की ही क़िस्मत बुलंद थी शायद
वगरना आप कहाँ और हमारा बाब कहाँ

'सुमन' नसीब से वो मुझ को मिल गये वरना
हसीन इतना अभी मेरा इंतिखाब़ कहाँ

घर में आ गया

पहले मेरी निगाह में फिर घर में आ गया
वो शख़्स रफ्ता रफ्ता मुक़द्दर में आ गया

फीकी है आज सारे सितारों की रोशनी
ये कौन शक्ल-ए-माह-ए-मुनव्वर में आ गया

महसूस कीजिए वो मेरा कौन है कि जो
दस्तक दिए बगैर मेरे घर में आ गया

देखा जो मेरे फ़न को तो फ़नकार कह उठे
क़तरा ये कैसे शक्ल-ए-समंदर में आ गया

बदली हुई सी उनकी नज़र देख कर 'सुमन'
दिल में जो दर्द था वो मेरे सर में आ गया

हमारे आँसू

आ के ठहरे हैं जो पलकों पे हमारे आँसू
बन न जायें कहीं टूटे हुए तारे आँसू
आँख से गिरते हैं और खाक़ में मिल जाते हैं
ढूँढते हैं तेरे दामन को हमारे आँसू

ऐ शब- ए- ग़म तू अकेली तो नहीं रोई है
साथ हमने भी तिरे अश्क़ पे वारे आँसू

तीरगी बढ़ती है जब भी ग़म-ए- तन्हाई की
बन के पलकों पे चमकते हैं सितारे आँसू

हमको उस ने ही रुलाने की क़सम खाई है
जिससे देखे नहीं जाते थे हमारे आँसू

माँग में अपनी सजा लूँगी सितारों की तरह
खाक़ में मिलने नहीं दूँगी तुम्हारे आँसू

वो जो पत्थर था उसे फूल न कर पाए 'सुमन'
हो गये इश्क़ में नाकाम ये सारे आँसू

जानता कोई नहीं

कब कहाँ किस को दग़ा दे, जानता कोई नहीं
ज़िंदगी सी बेमुरव्वत बेवफ़ा कोई नहीं

दिल कहीं, पत्थर न हो जाए बस इतना याद रख
ये वो पत्थर है कि जिस को पूजता कोई नहीं

बेअसर हैं तेरी आहें उस पे, तो हैरत न कर
पत्थरों का फूल से क्या वास्ता, कोई नहीं

भूल तो हर शख़्स से मुमकिन है, हम हों आप हों
क्यूँ कि हम सब आदमी हैं, देवता कोई नहीं

कितने बेहिस हो गये हैं आजकल दुनिया के लोग
अब किसी के दर्द- ओ- ग़म से आश्ना कोई नहीं

बेखुदी का राज़ बतलाते हैं तुम को आज हम
हम ने उस को पा लिया जिस का पता कोई नहीं

दूर रहता है निगाहों से मेरी फिर भी 'सुमन'
ज़ेहन- ओ - दिल में वो ही वो है दूसरा कोई नहीं

तुझ को ढूँढा कहाँ कहाँ

तुझ को ढूँढा कहाँ कहाँ जानाँ
तू रहा मेरे दरमियाँ जानाँ

तू हमारी नज़र से ओझल है
ज़र्रे ज़र्रे में है अयाँ जानाँ

उन की क़िस्मत सँवर गयी जिन को
मिल गया तेरा आस्ताँ जानाँ

हम तेरी रहगुज़र समझते हैं
नाम जिस का है कहकशाँ जानाँ

तू ने अपना बना लिया वरना
तू कहाँ और मैं कहाँ जानाँ

मेरी साँसों में तेरी खुशबू है
तू कहीं मुझ में है निहाँ जानाँ

तेरे चेहरे से जो टपकता है
चाँद में नूर वो कहाँ जानाँ

उम्र भर नाज़ मैं करूँ तुझ पर
तू रहे मुझ पे मेहरबाँ जानाँ

काश यूँ ही 'सुमन' के सर पे रहे
तेरी चाहत का सायबाँ जानाँ।

अयाँ - प्रकट
आस्ताँ - घर
कहकशाँ - आकाशगंगा
निहाँ - छिपा
सायबाँ - सायबान

शहर सुलगता दिखाई देता है

हर एक शहर सुलगता दिखाई देता है
उमीद क्या थी मगर क्या दिखाई देता है

अजब फ़रेब की आदत लगी है दुनिया को
हर एक चेहरे पे चेहरा दिखाई देता है

तेरे दयार में
सब खूबरू तो हैं
लेकिन
कहाँ कोई तेरे जैसा दिखाई देता है

ए काश अब्र- ए - करम
टूट कर बरस जाये
तमाम सहरा ही
प्यासा दिखाई देता है

जो तेरे हिज्र मे टपके हैं आँख से आँसू
हर एक अश्क़ में दरिया दिखाई देता है

सुना है चाँद सितारे नज़र चुराते हैं
जब उन को आपका चेहरा दिखाई देता है।

तेरा मेरा नहीं होने देंगे

हम यहाँ कुछ तेरा मेरा नहीं होने देंगे
अपनी यकजहती को रूस्वा नहीं होने देंगे

जान दे देंगे अगर जान पे बन आएगी
सर नगूं हम ये तिरंगा नहीं होने देंगे

खाक़ में मिल भी गये हम तो कोई बात नहीं
ए वतन हम तुझे रूस्वा नहीं होने देंगे

हम पे हँसने को तरस जायेंगे दुनिया वाले
हम कभी खुद को तमाशा नहीं होने देंगे

सबके दुख दर्द को अपनाएँगे अपनों की तरह
अब किसी भाई को तन्हा नहीं होने देंगे

हम मुहब्बत के दिये कर के रहेंगे रौशन
अब किसी घर में अँधेरा नहीं होने देंगे

आँखों में नमी आती है

मुस्कुराती हूँ तो आँखों में नमी आती है
अपने ही ज़र्फ़ पे फिर मुझ को हँसी आती है

चल के जिस राह पे आते हैं यहाँ दैर-ओ-हरम
उस से पहले ही मुहब्बत की गली आती है

इश्क़ की राह में पहरे न बिठाए कोई
ये वो शय है जो दबे पाँव चली आती है

दुश्मनी क्या है तेरी याद को आखरि मुझ से
जब तुझे भूलना चाहूँ ये तभी आती है

वो भी आ जाए किसी रोज़ 'सुमन' शाम ढले
जिस तरह उस की यहाँ याद चली आती है।

किसी का ग़म रखना

दिल में अपने किसी का ग़म रखना
अपनी खुशियों को मुहतरम रखना

शौक़-ए-मंज़िल मेरा बरहम रखना
मुझ से आगे मेरा क़दम रखना

आप हर जंग जीत जाएंगे
अपना हथियार बस क़लम रखना

कर दिया मेरी पर्दादारी ने
उस पे आसान निगाह खम़ रखना

क्या खब़र थी कि इतना मुश्किल है
प्यार की राह में क़दम रखना

आखरि साँस तक 'सुमन' अपने
हाथ में अमन का अलम रखना

कायम दुआ सलाम रहे

हर एक शख़्स से क़ायम दुआ सलाम रहे
जहां में फ़ैज़-ए-मुहब्बत हमेशा आम रहे

यहाँ जो आदमी अपना मक़ाम पहचाने
तो खुद़ ही उस की तमन्ना में हर मक़ाम रहे

किसी गरीब से पूछो कि ज़िंदगी क्या है
न सुब्ह, सुब्ह के जैसी न शाम, शाम रहे

जुदा-जुदा हैं यहाँ सब का इंतिखाब़-ए-नज़र
अज़ीज़ साक़ी किसी को किसी को जाम रहे

हुदूद-ए-दैर-ओ-हरम से निकल गये आगे
जो लोग तेरे तजस्सुस में तेज़ गाम रहे

किसी के सामने जलवा नुमाई है उस की
'सुमन' किसी को बस इतना कि हम- क़लाम रहे

ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना
गुवाहाटी भ्यूरो-अवनीत कौर दीपाली
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक
तेलंगाना भ्यूरो - डॉ अर्चना पाण्डेय
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल
सोलन ब्यूरो - प्रीति शर्मा असीम
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति '
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे
मुजफ्फरपुर ब्यूरो - डॉ०पुष्पा गुप्ता
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी -
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी'
चंडीगढ़ ब्यूरो - ऋतु गुलाटी ऋतम्बरा

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

साहित्य अनुरागी थी साधना श्रीवास्तव

क्यूँ मन प्रदीप्त के भीतर?
वह भोली - भाली सूरत।
बनती है और बिगड़ती,
वह भोली - भाली कीरत।
आँसू आँखों से छलके,
कुछ याद सखी की आयी।
कुछ विस्मृति सी मुस्काई,
कुछ पल हर्षित से उलझे।
मैं समझ नहीं पाता हूँ,
जो साथ बिताये दिन थे।
जिन रातों में दिन उलझा,
सोचा करता हूँ पल - पल।

(-स्मृति) कविता संग्रह से

महिला श्री साहित्य साधना सम्मान 2024 —
शहर समता महिला काव्यगोष्ठी की राष्ट्रीय
महासचिव सुमन ढ़ीगरा दुग्गल जी को

सोलर रूफटॉप लगवाएं

आकर्षक अनुदान एवं बिजली बिल में राहत पाएं

पीएम सूर्य घर : मुफ़्त बिजली योजना

योजना के अंतर्गत 300 यूनिट मुफ़्त बिजली

संयंत्र की क्षमता	केंद्र सरकार का अनुदान (रु.)	राज्य सरकार का अनुदान (रु.)	कुल अनुमन्य अनुदान (रु.)
1 KW	30,000	15,000	45,000
2 KW	60,000	30,000	90,000
3 KW	78,000	30,000	1,08,000
4 KW	78,000	30,000	1,08,000
5 KW	78,000	30,000	1,08,000

- प्लांट की अनुमानित लागत ₹60,000 प्रति किलोवाट।
- सोलर पैनलों की कार्य क्षमता अवधि लगभग 25 वर्ष।
- 3 KW का प्लांट मात्र ₹1800/- की आसान ईएमआई पर लगवाएं।
- मात्र 7% की ब्याज दर पर बैंक लोन।
- सोलर प्लांट कमीशनिंग के उपरांत सब्सिडी डी.बी.टी. द्वारा सीधे लाभार्थी के खाते में।
- बिजली बिल में दो तिहाई तक की बचत।
- यूपीनेडा में पंजीकृत वेंडर के माध्यम से ही सोलर रूफटॉप प्लांट लगवाएं। वेंडर का चयन ध्यानपूर्वक करें।

योजना का लाभ उठाने के लिए शीघ्र आवेदन करें -

https://pmsuryaghar.gov.in/

किसी भी प्रकार की समस्या/शिकायत के लिए वेबसाइट

https://upnedasolarsamadhan.in पर जाएं।

अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश